भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 | **जून** 2001 | **अंक** 6

स्मृति शेष

कथाकार शैलेश मटियानी

'टोबाटेक सिंह' के लेखक शैलेश मटियानी का शाहदरा स्थित मानव व्यवहार एवं विज्ञान संस्थान के निजी वार्ड के कमरा नं० 5 में मंगलवार, 24 अप्रैल 2001 को प्रात: लगभग 10 बजे निधन हो गया। उनका जन्म 14 अप्रैल 1931 को अल्मोड़ा जिले के बडेलिना गाँव में हुआ था। 1992 में शैलेशजी के कनिष्ठ पुत्र मनीष की कुछ लफंगों द्वारा हत्या कर दिये जाने के बाद से उनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया था। मनीष की असामयिक मौत से वे इस कदर आहत हुए कि उनका जीवन विषाद से भर गया। किसी ने बम फेंक कर उनके पुत्र की हत्या कर दी थी। आठ बार पागलपन से जूझते हुए अंतत: मानसिक चिकित्सालय में उन्होंने दम तोड़ दिया।

उत्तरांचल सरकार से उन्होंने सहायता की अपील की थी किन्तु उनका निवेदन उपेक्षाग्रस्त हो गया। गरीबी और उपेक्षा से जूझते हुए उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें प्रमुख हैं—चिट्ठी रसैन, हौलदार, भागे हुए लोग, गोपुली ठाफूरन, सरोवर के हंस, बावन नदियों का संगम तथा मुठभेड़ (सभी उपन्यास), चील प्रयास और पत्थर, अतीत तथा अन्य कहानियाँ आदि कहानी संग्रह हैं। 'क्रिया', 'राष्ट्रभाषा का सवाल' आपके प्रमुख निबन्ध संग्रह है। 'पर्वत से सागर तक' उनकी आत्म कथात्मक रचना है। 'मुड़-मुड़ के न देख' आपकी अन्तिम रचना है।

1994 में कुमाऊँ विश्वविद्यालय ने मटियानी जी को डी०लिट्० की उपाधि से सम्मानित किया था।

'हंस' सम्पादक राजेन्द्र यादव ने ठीक ही लिखा है—''दिल्लीवाले सत्ता और संस्कृति के केन्द्र में बैठकर सुविधाएँ लेते रहते हैं और अपने खाते में यश और कीर्ति बटोरते रहते हैं। यह आठ-आठ, दस-दस कहानियाँ लिखने वाले अपने ऊपर ग्रंथावली तक निकलवा लेते हैं। इन सबका यह नुकसान हुआ है कि छोटे शहरों और कस्बों में रहने वाले और जो उस संघर्ष करने वाले लेखक यह मानने लगे हैं कि बिना जोड़-तोड़ के अब कुछ हासिल नहीं होता। मैं मानता हूँ कि अगर मटियानीजी दिल्ली में होते और उन्हें जरा भी 'अटेंशन' मिलता तो वे कई बड़े लेखकों से बड़ा लेखक बन कर उभरते। यह उपेक्षा का दंश उन्हें जीवनभर दु:खी और परेशान करता रहा।''

पुरस्कारों का मायाजाल

आज कला, साहित्य, संस्कृति आदि के अनेक पुरस्कार शासन, शासकीय संस्थाओं और निजी संस्थाओं द्वारा दिये जा रहे हैं। पुरस्कारों की शुरुआत एक अच्छे उद्देश्य के लिए हुई थी। उद्देश्य था निरपेक्ष भाव से साहित्यकारों को प्रोत्साहन और संरक्षण प्रदान करना। अनेक साहित्यकारों, कलाकारों की स्मृति में उनके नाम से पुरस्कारों का नामकरण किया गया। उन दिवंगत साहित्यकारों तथा कलाकारों की स्मृति को अक्षुण बनाने की दिशा में यह सराहनीय प्रयास था। ये पुरस्कार रचनाकार के कृतित्व और व्यक्तित्व के आधार पर दिये गये।

किन्तु कालान्तर में ये पुरस्कार साहित्य और कला से अधिक शासन, राजनीति, दल तथा व्यक्ति से जुड़ गये और मध्ययुग के राजदरबारी साहित्यकारों की याद दिलाने लगे।

उत्तर प्रदेश सरकार का लखटकिया (2.51 लाख) भारत भारती पुरस्कार नागार्जुन, रामविलास शर्मा, धर्मवीर भारती, डॉ० नगेन्द्र, शिवमंगल सिंह 'सुमन', अमृतराय, पं० विद्यानिवास मिश्र, डॉ० जगदीश गुप्त ऐसे विख्यात साहित्यकारों को मिला और इस बार यह प्रतिष्ठापरक पुरस्कार लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' को निशंक दिया जायेगा।

निजी क्षेत्र भारतीय ज्ञानपीठ तथा बिड़ला फाउण्डेशन ने भी अपने विशिष्ट साहित्य पुरस्कारों में गरिमा बनाये रखने का प्रयास किया है। बिड़ला फाउण्डेशन ने पाँच लाख रुपये का प्रथम सरस्वती सम्मान हरिवंश राय बच्चन को दिया। दूसरा 2.50 लाख रुपये का व्यास सम्मान रामविलास शर्मा, शिवप्रसाद सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, डॉ० धर्मवीर भारती, कुँवरनारायण, केदारनाथ सिंह, गिरिराज किशोर आदि को दिया गया।

भारतीय ज्ञानपीठ ने भी ढाई लाख रुपये का पुरस्कार सुमित्रानंदन पंत, रामधारी सिंह दिनकर, अज्ञेय, महादेवी वर्मा, नरेश मेहता, निर्मल वर्मा ऐसे हिन्दी लेखकों को दिया।

मध्य प्रदेश सरकार का एक लाख रुपये का मैथिलीशरण गुप्त सम्मान विनोदकुमार शुक्ल, श्रीलाल शुक्ल, चन्द्रकान्त देवताले तथा भीष्म साहनी को दिया गया।

इन पुरस्कारों में राजनीति की गंध नहीं आती किन्तु सरकारी पुरस्कार राजनीति से प्रभावित होते जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश सरकार ने श्री राजेन्द्र यादव को पुरस्कार देने की घोषणा की उसे यादव जी ने अस्वीकार करते हुए बिहार के मुख्यमंत्री श्री लालू यादव का पुरस्कार स्वीकार कर लिया। इस प्रकार लेखक भी इस राजनीति में शामिल होने लगे।

बिहार सरकार के राजभाषा पुरस्कार विवाद-ग्रस्त हो गये हैं। राजेन्द्र शिखर सम्मान की घोषणा वरिष्ठ लेखक भीष्म साहनी के साथ बिहार विधान परिषद के अध्यक्ष प्रो० जाबिर हुसेन के लिए की गई। वहीं बाबा साहब अंबेदकर पुरस्कार के लिए राजद के प्रदेश महासचिव रामवचन राय का चयन किया गया। बिहार के साहित्यकारों ने इन पुरस्कारों का प्रबल विरोध किया, फलस्वरूप मुख्यमंत्री को इन पुरस्कारों को स्थगित करना पड़ा और मुख्य सचिव को इसकी जाँच सौंपी गई। किन्तु राजभाषा मंत्री ने अपना अपमान समझते हुए इस जाँच का विरोध किया और वे इसे मंत्रिमण्डलीय समिति से कराना चाहते हैं।

राजभाषा के मंत्री, सचिव और राजद के नेता इन पुरस्कारों द्वारा बिहार के साहित्यकारों को उपकृत करने का जो श्रेय लेना चाहते थे, वह उनकी अप्रतिष्ठा का द्योतक बना।

क्या भारतीय राजनीति और राजसत्ता इतनी सुसंस्कृत होगी कि वह दलगत और व्यक्तिगत राजनीति से ऊपर उठ कर ज्ञान और रचनाशीलता को महत्त्व देने में सक्षम हो सके?

भाषा, साहित्य, संवाद, समाचार

डॉ० राकेशगुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ का लोकार्पण

साहित्य-साधक, मनीषी और कृति व्यक्तित्व के धनी 82 वर्षीय डॉ० राकेश गुप्त को समर्पित 'भारतीय काव्य चिन्तन' नामक एक भव्य अभिनन्दन-ग्रंथ का लोकार्पण दिनांक 14 अप्रैल, 2001 को अलीगढ़ में किया गया। अनेक विशिष्ट साहित्यकारों ने आलेख भेजकर इस ग्रन्थ को गरिमा प्रदान की है जिनमें श्री विष्णु प्रभाकर, डॉ० शिवमंगल सिंह सुमन, डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी, डॉ० रामदरश मिश्र, डॉ० त्रिभुवन सिंह, डॉ० लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'बटरोही' आदि प्रमुख हैं।

'दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचंद' का लोकार्पण

'जीवन में सफलता नहीं चरितार्थता महत्त्वपूर्ण है।' **—प्रो० विष्णुकान्त शास्त्री**

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचंद' (सम्पादक-सदानन्द शाही) पुस्तक का लोकार्पण करते हुए प्रख्यात संस्कृति चिन्तक और प्रदेश के राज्यपाल प्रो० विष्णुकान्त शास्त्री ने कहा—प्राय: हम सफलता के पीछे भागते हैं पर जीवन में सफलता नहीं, चरितार्थता महत्त्वपूर्ण है। एक असफल प्रतीत होने वाला जीवन भी चरितार्थ हो सकता है और सफल प्रतीत होने वाला जीवन निरर्थक। प्रो० शास्त्री ने कहा कि प्रेमचंद का जीवन और साहित्य हमें यह विवेक देता है। प्रो० शास्त्री ने प्रेमचंद की कर्मभूमि में प्रेमचंद संस्थान के होने को महत्त्वपूर्ण प्रयत्न बताया और कहा कि यहाँ आना तीर्थयात्रा जैसा अनुभव है। समारोह के अध्यक्ष प्रख्यात आलोचक प्रो० रामचन्द्र तिवारी ने कहा—दलित साहित्य आन्दोलन की परिणति जो भी हो पर इसके मूल में जो संवेदना कार्य कर रही है, वह सच्ची है। इसलिए इस साहित्यान्दोलन का सम्यक् मूल्यांकन करना चाहिए। संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तक इस दिशा में महत्त्वपूर्ण आरम्भ है। संस्थान के अध्यक्ष प्रो० परमानन्द श्रीवास्तव ने प्रो० विष्णुकांत शास्त्री का स्वागत करते हुए उन्हें संवाद के लिए प्रस्तुत रहने वाला संस्कृति विचारक बताया। संस्थान के निदेशक सदानंद शाही ने संस्थान का परिचय और गोरखपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती शान्ता सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का सुचारु संचालन श्रीमती शुभा राव ने किया।

❑ ❑ ❑

हमें अपनी सभी भाषाओं को चमकाना चाहिए। ...जो अंग्रेजी पुस्तकें काम की हैं, हमें उनका अनुवाद करना होगा। बहुत से शास्त्र सीखने का दम्भ हमें त्यागना होगा। सबसे पहले धर्म अथवा नीति की ही शिक्षा दी जानी चाहिए। प्रत्येक पढ़े लिखे भारतीय को अपनी भाषा का- हिन्दू को संस्कृत का, मुसलमान को अरबी का, पारसी को फारसी का और हिन्दी का ज्ञान सबको होना चाहिए। कुछ हिन्दुओं को अरबी और कुछ मुसलमानों तथा पारसियों को संस्कृत सीखनी चाहिए। उत्तर और पश्चिम भारत के लोगों को तमिल सीखनी चाहिए। सारे भारत के लिए जो भाषा चाहिए वह तो हिन्दी ही होगी। उसे उर्दू या देवनागरी लिपि में लिखने की छूट रहनी चाहिए।

हमारा रहन-सहन एकदम यूरोपीय ढंग का होता जा रहा है और इस तरह हम बहुत हद तक अपना आत्माभिमान खो बैठे हैं। हम लोग अंग्रेजी में ही सोचते और बातचीत करते हैं। इस प्रकार हम लोग अपनी देशी भाषाओं को कंगाल बना रहे हैं और जनता की भावनाओं से विमुख होते जा रहे हैं। **—महात्मा गाँधी**

❑ ❑ ❑

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं को लागू कराने की माँग के संदर्भ में पूर्व प्रधानमंत्री वी०पी० सिंह ने कहा कि भारतीय भाषाओं की अस्मिता का संकट तब तक हल नहीं होगा जब तक एकजुटता के साथ इस समस्या का समाधान नहीं निकाला जाता और यह एकजुटता तभी संभव है जब सभी दल एवं सभी भाषा भाषी राग-द्वेष छोड़ प्रतिबद्धता के साथ सामने आएँ।

भारतीय भाषाओं की अस्मिता की रक्षा होनी चाहिए। कोई दल कुछ नहीं कर रहा, बड़े दु:ख की बात है। इसके बावजूद सच यह भी है कि किसी भी समस्या का समाधान क्रोध या उत्तेजना से नहीं निकलता। समस्या जितनी गंभीर हो, उसके निराकरण के लिए उतना ही गंभीर होना पड़ता है। भारतीय भाषाओं की समस्या भी कुछ ऐसी ही है, लेकिन पीड़ा होता है यह देखकर कि यहाँ भी लोग राजनीति से बाज नहीं आ रहे। मैं ऐसे लोगों से पूछना चाहता हूँ कि क्या भाजपा या प्रधानमंत्री को अपशब्द कह देने से समस्या का हल निकल आएगा? जाहिर है नहीं। तब फिर मंच का दुरुपयोग क्यों, सार्थक उपयोग क्यों नहीं?

भारतीय भाषाओं की रक्षा के लिए हमें स्वयं में भी शक्ति लानी होगी। विचार इस पर भी करना होगा कि करीब डेढ़ दशक पुराना यह संघर्ष अभी तक जनांदोलन क्यों नहीं बन पाया। केवल सरकार को कोसने से कुछ नहीं होता क्योंकि संविधान में संशोधन के लिए दो तिहाई बहुमत वर्तमान सरकार के पास है नहीं।

हमें अपनी उस मानसिक दुर्बलता का ही उपचार करना होगा जिसके हम न तो अंग्रेजी का मोह छोड़ पा रहे हैं और न भारतीय भाषाओं को उनका उचित स्थान ही दे पा रहे हैं। हालांकि कुछेक राज्यों में भारतीय भाषाओं की स्थिति अच्छी है लेकिन ज्यादा बुरा हाल हिन्दी का है।

हमें इस सवाल का जवाब खोजना चाहिए कि उत्तर भारत में अंग्रेजी स्कूलों की संख्या क्यों बढ़ती जा रही है? क्यों हमारी शिक्षा नीति भारतीय भाषाओं के अनुरूप नहीं बन पाई।

निस्सन्देह इसके लिए भी हमारे राजनीतिक दलों में प्रतिबद्धता एवं दृढ़ इच्छाशक्ति का अभाव ही मुख्य रूप से दोषी है। **—नरेन्द्र मोहन**

संसद सदस्य, सम्पादक दैनिक जागरण

विश्व सहस्राब्दि हिन्दी सम्मेलन

फिजी की राजधानी सुवा में 21 जून से 23 जून तक विश्व सहस्राब्दि हिन्दी सम्मेलन आयोजित है। इस सम्मेलन में 100 विदेशी हिन्दी विद्वानों के भाग लेने की सम्भावना है। फिजी हिन्दी साहित्य समिति इस सम्मेलन का आयोजन करेगी।

❑ ❑ ❑

15 को 'हिन्दी रत्न'

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल आचार्य विष्णुकांत शास्त्री ने हिन्दी एवं संस्कृति प्रचार समिति (भारत) द्वारा आयोजित 'हिन्दी एवं संस्कृति अलंकरण समारोह-2001' में देश-विदेश में हिन्दी की पहचान बनाने वाले छह विदेशी और नौ भारतीय मनीषियों को 'हिन्दी रत्न' से सम्मानित किया। भारत में मारीशस के उच्चायुक्त दानीलाल शिवजी और पेट्रोलियम राज्यमंत्री संतोष गंगवार भी समारोह में मौजूद थे।

हिन्दी रत्न पाने वाले विदेशियों में जापान के ओसाका विश्वविद्यालय में भारतीय भाषाओं के निदेशक प्रो० तोमियो मिजोकामि, जर्मनी वि०वि० की पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष सुश्री डॉ० मारगोट गात्सलाफ, नीदरलैंड स्थित लेडिन वि०वि० में भारतीय भाषाओं के निदेशक डॉ० मोहनकांत गौतम, मारीशस हिन्दी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष अजामिल माताबदल, डर्बन वि०वि० दक्षिण अफ्रीका के हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के निदेशक प्रो० रामभजन सीताराम, बरेली में जन्मे त्रिनिनाद, वैस्टइंडीज में हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति के शिक्षक प्रो० हरीशंकर आदेश शामिल हैं। भारत के प्रसिद्ध साहित्यकार महीप सिंह, श्री शंकराचार्य संस्कृत वि०वि०, केरल के पूर्व आचार्य वी०डी० कृष्णन, लेखक प्रेमचंद कटोच, डॉ० कामता कमलेश, महेश्वर दयालु गंगवार, उ०प्र० के पुलिस महानिदेशक महेशचंद्र द्विवेदी, पत्रकार तरुण विजय, रंगकर्मी नादिरा बब्बर, और स्व० डॉ० देवीशंकर अवस्थी (मरणोपरांत) को हिन्दी रत्न से विभूषित किया गया।

डाक व्यय 100% बढ़ोत्तरी का विरोध

पुस्तकों के प्रेषण पर **100% डाक व्यय की वृद्धि,** लेखक प्रकाशक और पाठक पर एक ऐसा टैक्स सरकार ने लगाया है जो उनके प्रसार-प्रचार में बहुत बड़ी बाधा बन गया है। **अब 60/- की पुस्तक पर 25/-डाक व्यय लगेगा।** पाठक तक पुस्तक पहुँचाने का एकमात्र माध्यम डाक व्यवस्था है।

एक तरफ सरकार कहती है कि साक्षरता को यथाशीघ्र पूरी तरह फैला देना है, और **दूसरी ओर डाक व्यय में 100% की वृद्धि** की जाती है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, टी०वी०, कम्प्यूटर, इण्टरनेट भी पुस्तकों के पठन की रुचि पर ध्यान कम कर रही है। कागज़, प्रिंटिंग महँगा हो रहा है। पुस्तकों की छपने की संख्या कम होने पर पुस्तकें महँगी होती जा रही हैं। ऐसे में पुस्तक को बचाना बहुत जरूरी है।

हिन्दी-पत्रिकाएँ

हिन्दी पुस्तकों के पाठकों की संख्या भले ही नहीं बढ़ रही है किन्तु हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के पाठकों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। जिस प्रकार राजनीतिक समाचार और संवाद चटखारे लेकर पढ़े जाते रहे हैं, उसी प्रकार साहित्यिक आरोप-प्रत्यारोप, उत्तर-प्रत्युत्तर से पूर्ण पत्रिकाएँ साहित्य और साहित्यकारों को चर्चित बना रही हैं। इससे गम्भीर साहित्यिक चेतना नहीं जागृत होती, फिर भी नये लेखकों के लिए यह अत्यन्त उत्साहजनक है। हम ऐसी सभी पत्रिकाओं की सफलता की कामना करते हैं।

आवाज औरत की (त्रैमासिक)
सम्पादकीय समूह : शशि सामल
आयाश बेंजामिन
सम्पर्क, छत्तीसगढ़ महिला जागृति संगठन
एन-7, अनुपम नगर, पो० शंकर नगर
रायपुर-492007
(प्रति अंक 15.00)

कला समय (द्वैमासिक)
सम्पादक : विनय उपाध्याय
सम्पर्क, ई० 7/5, अशोका सोसायटी
अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016
(प्रति अंक 20.00, वार्षिक 125.00)

रचना-विमर्श (त्रैमासिक)
सम्पादक : योगेन्द्र
सम्पर्क, 57 नारायणी भवन, चाँदपोल बाजार
जयपुर-362001

भरतरंग (अद्धवार्षिक)
सम्पादक : सुशील कुमार सिंह
भारतेन्दु नाट्य अकादमी
1-विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ
(25.00)

कथन (त्रैमासिक)
सम्पादक : रमेश उपाध्याय
साक्षरा अपार्टमेंट्स, ए-3 पश्चिम विहार
नयी दिल्ली-63
(वार्षिक 100.00)

युद्धरत आम आदमी (त्रैमासिक)
सम्पादक : रमणिकलाल गुप्ता
सी०5, लाजपत नगर-1, नई दिल्ली-24
(वार्षिक 80.00)

बृधन (त्रैमासिक)
सम्पादक : अनिल कुमार पाण्डेय
राहुल बहुआयामी शोध संस्थान
बी-3 सी०ई०एल० अपार्टमेंट्स
बी-14 बसुंधरा इन्क्लेव, दिल्ली-96
(वार्षिक 40.00)

फिलहाल (त्रैमासिक)
सम्पादक : प्रीति सिन्हा
एम० 46/2 श्रीकृष्ण नगर
पटना-1 (वार्षिक 40.00)

अब (त्रैमासिक)
सम्पादक : शंकर
282 गोरक्षिणी पथ, सासाराम-821105
(वार्षिक 60.00)

सनद (अनियतकालीन)
सम्पादक : मंजु मलिक
सनद प्रकाशन, दल्लूचक
खगौल-801105 (प्रति अंक 15.00)

साक्षात्कार (मासिक)
सम्पादक : आग्नेय
मध्य प्रदेश साहित्य परिषद, संस्कृति भवन
बाणगंगा, भोपाल-3
(वार्षिक 150.00)

संवेद (अनियतकालीन)
सम्पादक : किशन कालजयी
अमोला कालोनी, महात्मा गाँधी मार्ग
जमालपुर, मुंगेर-811224
(प्रति अंक 20.00)

परिषद पत्रिका (त्रैमासिक)
(153-156 गोपाल सिंह नेपाली संयुक्तांक)
सम्पादक : डॉ० मिथिलेश कुमार मिश्र
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद
पटना
(45.00)

उद्‌भावना (द्वैमासिक)
सम्पादक : अजय कुमार
एच-55, सेक्टर 23, राजनगर, गाजियाबाद
(प्रति अंक 15.00, वार्षिक 80.00)

युग स्पंदन (त्रैमासिक)
सम्पादक : म०प्र० निदरिया
1084/44 मानकपुरा, करोलबाग
नई दिल्ली-5
(प्रति अंक 10.00, वार्षिक 40.00)

''लघु पत्रिकाएँ राजपथ पर न चलकर नयी पगडंडियाँ बनाती हैं और उन्हीं पर चलती हैं, क्योंकि यही उनका उद्देश्य होता है। आज लघु पत्रिकाएँ पगडंडियाँ बना पा रही हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में ही लघु पत्रिकाओं की अस्मिता निहित है।''
—इन्द्रनाथ मदान

साहित्यकार प्यारा सिंह का निधन

प्रसिद्ध पंजाबी साहित्यकार एवं शिरोमणि साहित्य पुरस्कार से सम्मानित **प्यारा सिंह पदम** का एक मई की रात दिल का दौरा पड़ने से पटियाला में उनके निवास पर निधन हो गया। वह 84 वर्ष के थे। उन्हें दिल का दौरा पड़ने के बाद राजेंद्र अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहाँ उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। प्रो० पद्म के परिवार में दो पुत्रियाँ हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी के नाम दो पत्र

महावीरप्रसाद द्विवेदी 14.10.1937

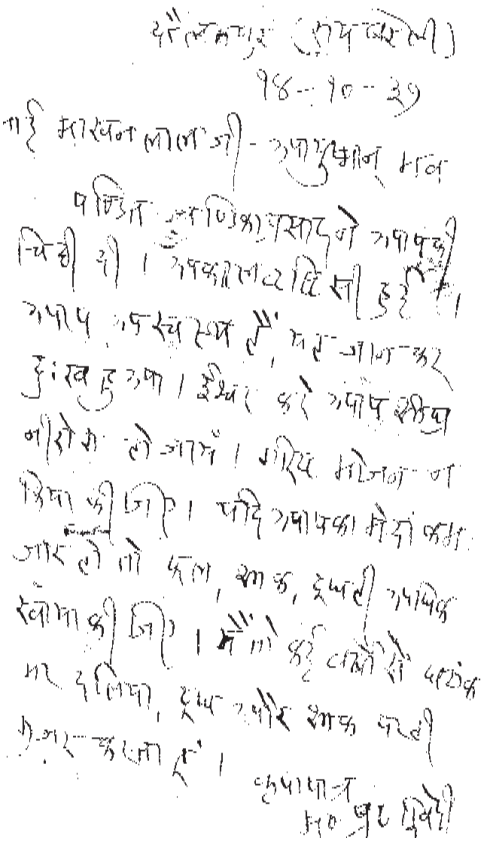

प्रेमचंद 31.8.1935

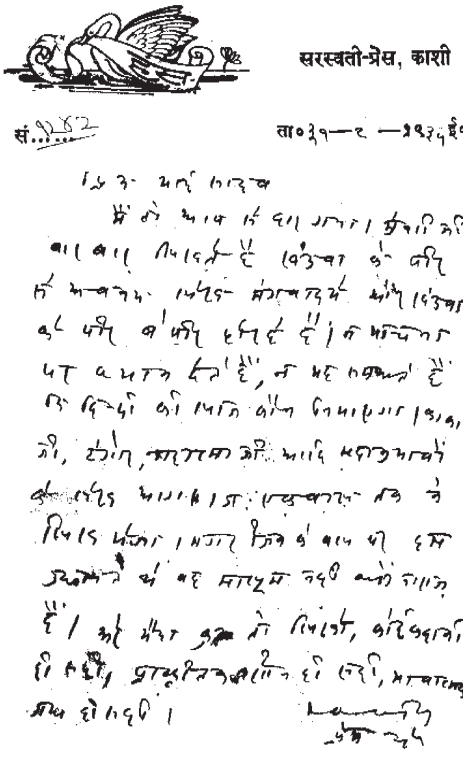

पुस्तक समीक्षा

मैत्रेयी

प्रभुदयाल मिश्र

'मैत्रेयी' उपनिषद की एक सशक्त भूमिका पर आधारित उपन्यास है। श्री मिश्र का योग, दर्शन और साहित्य पर समान अधिकार है। 'मैत्रेयी' उनकी इस समन्वित पात्रता का प्रमाण है।

यह उपन्यास आठ उपशीर्षकों में विभाजित किया गया है। वस्तुत: मधुकाण्ड, कात्यायनी, याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी, सामश्रवा, जनक, आरण्यक और मधुकाण्ड उत्तर आदि ये शीर्ष जैसे एक केन्द्रीय परिदृश्य के विभिन्न गवाक्ष है, जिनके माध्यम से लेखक ने अपने दार्शनिक सत्य को विभिन्न कोणों से प्रदर्शित करने की चेष्टा की है। मूल कथा लगातार ऋषि यावल्क्य और उनकी द्वितीय पत्नी मैत्रेयी ही हैं। चाहे जनक की सभा की ज्ञानगर्विता गार्गी हो अथवा ऋषि-आश्रम की अनुगता संन्यासिन, उसकी प्रश्नाकुलता उसे याज्ञवल्क्य के सुदीर्घ समाधानों से भी अधिक उसे वाचालता प्रदान करती है। उपनिषदों की ज्ञान और दार्शनिकता से बोझिल कथा को रससिक्त बनाने के लिए लेखक ने गार्गी और मैत्रेयी नाम से प्रख्यात प्राय दो भिन्न पात्रों की एक तार्किक संगति बैठायी है। यह अस्वाभाविक भी नहीं लगता कि अपने ज्ञान के गुमान में याज्ञवल्क्य को सबसे प्रभावी चुनौती देने वाली मैत्रेयी ऋषि के प्रति समाकृष्ट भी हुई हो और उनकी सम्पत्ति के बँटवारे के काल का व्यवहार तो निश्चित ही उसकी मूल प्रकृति के निकट है ही।

पुस्तक का कलेवर निश्चय ही प्रभावशाली है। इसके मुखपृष्ठ पर परा और अपरा विद्याओं की तरह मैत्रेयी और कात्यायनी विश्वास वटवृक्ष की छाया में जैसे बैठती हैं, जिनके ऊपर ज्ञान का सूरज अपनी सम्पूर्ण आभा बिखेरता है।

रु. 120 **डॉ० आनन्दवर्धन, आकलन 36**

वाक्सिद्धि

कल्याणमल लोढ़ा

वाक् के विशिष्ट अर्थों से प्रेरणा प्राप्त कर प्रो० कल्याणमल लोढ़ा ने अपनी पुस्तकों का नाम—वाक्तत्त्व, वाग्विभव, वाक्पथ, वाग्मिता, वाग्दोह, वाग्द्वार और अन्त में (इस पुस्तक का नाम भी) वाक्सिद्धि रखा है। संस्कृत वाङ्मय की परम्परा को हिन्दी साहित्य से सम्बद्ध करने का प्रयास सराहनीय है। इससे लगता है, संस्कृत वाङ्मय पुरातन के साथ नवीन भी है। हमारी परम्परा प्रवहमान है।

प्रो० कल्याणमलजी लोढ़ा का उद्धरण-बहुल है किन्तु ये उद्धरण खटकने वाले नहीं हैं अपितु विषय को क्रम देने के लिए तथा स्पष्टीकरण हेतु उद्धृत हैं। इनके कारण संस्कृत वाङ्मय को हिन्दी वाङ्मय के साथ क्रमबद्ध किया गया है।

—डॉ० राजमल बोरा

इस माध्यम से वे भारतीय पुनर्जागरण से लेकर हिन्दी की सार्वदेशिकता तक, और बालमुकुन्द गुप्त से लेकर सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्यिक योगदान की अपने निराले ढंग से मीमांसा करते हैं। परम प्रेमरूपा राधा और कर्ण के अभिशप्त जीवन पर आधुनिक हिन्दी काव्य में आये संदर्भों का जो बारीक विवेचन उन्होंने किया है, वह उनकी संवेदनात्मक चेतना के महनीय आयामों को सहज प्रकट कर देता है। कई-कई बार पढ़ी गई सामग्री को श्री लोढ़ा के माध्यम से देखना जितना उत्तेजक है, उतना ही उनकी 'वाक्-सिद्धि' का परिचायक भी है।

रु. 160 **—डॉ० श्यामसुन्दर निगम**

प्रियदर्शिनी साहित्य पुरस्कार

कवि **सूर्यभानु गुप्त** और **तूयंबक विनायक सरदेशमुख** को 17वें प्रियदर्शिनी अकादमी साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

'एक हाथ की ताली' जैसी कई श्रेष्ठ कविताओं के रचयिता श्री गुप्त को हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए और सरदेशमुख को मराठी साहित्य में योगदान के लिए पुरस्कृत किया गया। सिंधी भाषा के लिए प्रोफेसर राम पंजवानी स्मृति पुरस्कार डॉक्टर दयाल आशा को दिया गया।

इण्डियन मर्चेंट्स चैम्बर में 26 मई को एक समारोह में दोनों साहित्यकारों को 25,000 रुपये और ट्राफी देकर सम्मानित किया गया।

साहित्यकार का निधन

सुविख्यात मराठी साहित्यकार **मालतीवाई बेडेकर** उर्फ विभावरी शिरूरकर का 7 मई को पुणे में उनके निवास पर निधन हो गया। वे 96 वर्ष की थीं। उनके परिवार में केवल उनका पुत्र श्रीकांत है।

हे माँ सरस्वती, चाहे जितनी विपदाएँ देना, मगर लेखक जरूर बना देना! इस अपमान और प्रताड़ना के जीवन से उबार लेना, माता सरस्वती! ....अगर है तू सचमुच की माता तो लेखक जरूर बना देना। नरक कर देना जिन्दगी को, लेकिन लेखक जरूर बना देना, माता, लेखक जरूर बना देना!

—शैलेश मटियानी

पुरस्कार-सम्मान

सुरेन्द्र प्रकाश को उर्दू पुरस्कार

दोहा कतर की साहित्यिक संस्था अलिस फरोगे उर्दू साहित्य का छठाँ अन्तर्राष्ट्रीय उर्दू पुरस्कार कथाकार **सुरेन्द्र प्रकाश** को सम्पूर्ण साहित्यिक सेवाओं के लिए दोह कतर में अक्टूबर में दिया जायेगा। पुरस्कार स्वरूप एक लाख अस्सी हजार रुपये नगद, गोल्ड मेडल और प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

शंभूनाथ सम्मानित

प्रसिद्ध आलोचक **डॉ० शंभूनाथ** को पाँचवें देवीशंकर अवस्थी स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री पी०सी० जोशी ने **डॉ० शंभूनाथ** को उनकी पुस्तक 'संस्कृति की उत्तरकथा' के लिए प्रदान किया।

राजेन्द्र माथुर पुरस्कार

मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ द्वारा 1994 में स्थापित राजेन्द्र माथुर स्मृति पत्रकारिता पुरस्कार इस वर्ष वरिष्ठ पत्रकार तथा दैनिक भाष्कर के सम्पादक **नरेन्द्रकुमार सिंह** को श्री माथुर की पैंसठवीं जन्मतिथि 7 अगस्त को भोपाल में दिया जायेगा। 1998 तथा 1998 के लम्बित पुरस्कार दिनेश चन्द्र शर्मा तथा विष्णु कौशिक को दिये जायेंगे।

राजेन्द्र अवस्थी पुरस्कृत

जाने-माने लेखक, कथाकार और कादम्बिनी के सम्पादक **डॉ० राजेन्द्र अवस्थी** को स्वस्थ और नैतिक लेखन के लिए राजस्थान के श्रीडुगरगढ़ कस्बे में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सानिध्य में आयोजित समारोह में 'अणुव्रत लेखक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' पुरस्कृत

कला-संस्कृति के विविध आयामों की सुरुचिपूर्ण पत्रिका 'कला समय' को सुसम्पादन के लिए रामेश्वर गुरू पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। इस पुरस्कार के तहत 'कला समय' के सम्पादक श्री विनय उपाध्याय को पाँच हजार रुपये की नकद राशि, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया जायेगा।

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान द्वारा जून-2001 में आयोजित वार्षिक समारोह में उक्त पुरस्कार का वितरण किया जायेगा।

बिड़ला फाउण्डेशन का सरस्वती सम्मान

के०के० बिड़ला फाउण्डेशन ने भारतीय भाषाओं के लिए दिया जाने वाला पाँच लाख रुपये का शीर्षस्थ सरस्वती सम्मान 1999 तमिल के शीर्षस्थ लेखक **डॉ० पार्थ सारथी** को उनकी कृति 'रामानुजर' नाट्य कृति को प्रदान किया है। इस नाट्य कृति में डॉ० पार्थ सारथी ने बारहवीं शताब्दी के दार्शनिक और सामाजिक क्रान्ति द्रष्टा संत रामानुज के जीवन और कार्यों को अपने सृजन का विषय बनाया है।

2000 का सरस्वती सम्मान उड़िया के शीर्षस्थ लेखक मनोजदास को उनकी कथा कृति 'अमृत फल' को दिया गया है। अमृतफल उज्जैन के दार्शनिक राजा भतृहरि के जीवन पर आधारित है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रमुख साहित्यिक, आध्यात्मिक तथा पाठ्य ग्रन्थ

हिन्दी साहित्य

साहित्य शास्त्र

आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि (पारिभाषिक शब्दावली का साक्ष्य) *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 150
काव्यशास्त्र *डॉ. भगीरथ मिश्र* 150
नया काव्यशास्त्र *डॉ. भगीरथ मिश्र* 80
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धान्त और वाद *डॉ. भगीरथ मिश्र* 150
काव्यरस : चिन्तन और आस्वाद *डॉ. भगीरथ मिश्र* 50
आलोचक का दायित्व *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 40
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र *डॉ. अर्चना श्रीवास्तव* 50

व्याकरण, भाषा और कोश

प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार (सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग) *रघुनन्दनप्रसाद शर्मा* 150
कार्यालयीय हिन्दी *डॉ. विजयपाल सिंह* 80
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना ,, 65
भाषाशास्त्र तथा हिन्दी भाषा की रूपरेखा *डॉ. देवेन्द्रकुमार शास्त्री* 50
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र *कपिलदेव द्विवेदी* 200
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ. भोलाशंकर व्यास* 100
मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण *डॉ. माताबदल जायसवाल* 250
लिपि, वर्तनी और भाषा *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 30
हिन्दी व्याकरण की सरल पद्धति ,, 40
नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश ,, 200
सिद्धार्थ पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश (छात्रोपयोगी) *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 40

साहित्य समीक्षा

भारतेन्दु के नाट्य शब्द *डॉ. पूर्णिमा सत्यदेव* 100
सृजन यज्ञ जारी है (डॉ० विवेकी राय) *डॉ. अनिलकुमार 'आंजनेय'* 100
हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई *डॉ. मदालसा व्यास* 200
आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष *डॉ. रतनकुमार पाण्डेय* 400
टूटते हुए गाँव का दस्तावेज (लोक ऋण : बनगंगी मुक्त है) *सं. डॉ. सर्वजीत राय* 40
समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ *डॉ. रामकली सराफ* 200
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60
हिन्दी का गद्य-साहित्य *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 250
हिन्दी साहित्य : विभिन्न परिदृश्य *डॉ० सदानन्द गुप्त* 160
हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास *डॉ. लाल साहब सिंह* 50
कविवर बिहारी *जगन्नाथदास 'रत्नाकर'* 40
निबन्धकार पं. विद्यानिवास मिश्र *श्रुति मुखर्जी* 50
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा *डॉ. अनन्तकीर्ति तिवारी* 80

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य-समीक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 70
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश ,, 50

प्रसाद-साहित्य

ध्रुवस्वामिनी (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 9
ध्रुवस्वामिनी (मूल नाटक तथा समीक्षा) *डॉ. जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव* 20
प्रसाद तथा 'आँसू' (मूल, टीका तथा समीक्षा) *डॉ. विनयमोहन शर्मा* 20
कामायनी (काव्य) *जयशंकरप्रसाद* 20
चन्द्रगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 25
स्कन्दगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 20
अजातशत्रु (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 16

प्रेमचंद साहित्य

कर्मभूमि *प्रेमचंद* 40
निर्मला *प्रेमचंद* 25
संक्षिप्त गबन *प्रेमचंद* 30
गबन (सम्पूर्ण) *प्रेमचंद* 40
गोदान *प्रेमचंद* 75

कबीर-साहित्य

कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित) *डॉ. जयदेव सिंह तथा डॉ. वासुदेव सिंह*
प्रथम खंड : रमैनी 70
द्वितीय खंड : सबद 250
तृतीय खंड : साखी 125
कबीर काव्य कोश *डॉ. वासुदेव सिंह* 150
कबीर वाणी पीयूष *डॉ. जयदेव सिंह तथा डॉ. वासुदेव सिंह* 40
हिन्दी संत काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन *डॉ. वासुदेव सिंह* 250
कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ. शुकदेव सिंह* 40
कबीर की भाषा *डॉ. माताबदल जायसवाल* 50
संत कबीर और भगताही पंथ *डॉ. शुकदेव सिंह* 130
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर) *सं. डॉ. भगवानदेव पाण्डेय* 150
कबीर और भारतीय संत साहित्य *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 100

तुलसी साहित्य मीमांसा

कथा राम कै गूढ़ *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 125
मानस सूक्ति सुधा *डॉ. भगवानदेव पाण्डेय* 80
मानस मीमांसा *डॉ. युगेश्वर* 150
मानस विमर्श (दो भाग) *भगीरथ दीक्षित* 300

लोक साहित्य

भोजपुरी लोक साहित्य *डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय* 250
गंगाघाटी के गीत *डॉ. हीरालाल तिवारी* 100
लोकगीतों के संदर्भ और आयाम *डॉ. शान्ति जैन* 700

काव्य-ग्रंथ

जौहर *श्यामनारायण पाण्डेय* 100
परशुराम (खण्ड-काव्य) *श्यामनारायण पाण्डेय* 60
वेलि क्रिसन रुकमणी री *सं. डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित* 80
मिरगावती (कुतुबन कृत) *सं. डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 150
चांदायन (दाउद विरचित प्रथम हिन्दी सूफी प्रेम-काव्य) *डॉ. माताप्रसाद गुप्त* 100
कन्हावत (जायसी कृत) *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 80
रीति काव्यधारा *डॉ. रामचन्द्र तिवारी डॉ. रामफेर त्रिपाठी* 50
कीर्तिलता और विद्यपति का युग *डॉ. अवधेश प्रधान* 40
सूर सञ्चयन *उर्मिला मोदी* 30

उपन्यास

सागरी पताका *राधामोहन उपाध्याय* 250
मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास) *प्रभुदयाल मिश्र* 120
बहुत देर कर दी *अलीम मसरूर* 60
मंगला *अनन्तगोपाल शेवड़े* 30
लोकऋण *डॉ. विवेकी राय* 150
बनगंगी मुक्त है *डॉ. विवेकी राय* 50
बबूल *डॉ. विवेकी राय* 40
चौदह फेरे *शिवानी* 100
तरुण संन्यासी (विवेकानन्द) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 120

ललित निबन्ध

वाणी का क्षीरसागर *कुबेरनाथ राय* 120
जगत तपोवन सो कियो *डॉ. विवेकी राय* 100
किरात नदी में चन्द्र-मधु *कुबेरनाथ राय* 40
कहीं दूर जब दिन ढले *डॉ. गुणवन्त शाह* 40
भोर का आवाहन *डॉ. विद्यानिवास मिश्र* 20

जीवनी-संस्मरण-यात्रा-रेखाचित्र

भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं मदनमोहन मालवीय *डॉ० चन्द्रकला पाडिया* 150
हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र *सं. डॉ. चौथीराम यादव* 20
संस्मरण और रेखाचित्र *सं. उर्मिला मोदी* 20
रेखाएँ और रेखाएँ *सुधाकर पाण्डेय तथा विश्वनाथप्रसाद तिवारी* 25

मनीषी, संत, महात्मा

करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ. गुणवन्त शाह* 25
महामानव महावीर *डॉ. गुणवन्त शाह* 30
नीब करौरी के बाबा *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 12
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ. गिरिराज शाह* 100
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति) *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60
मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन) *डॉ. भगवतीप्रसाद सिंह* 300
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2) *पं. गोपीनाथ कविराज* 80
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग-3) ,, 50

कविराज-प्रतिभा *लक्ष्मीनारायण तिवारी* 64
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 160
ज्ञानगंज *पं. गोपीनाथ कविराज* 80
योगिराज विशुद्धानंद प्रसंग तथा तत्त्व-कथा '' 130
पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ. अर्जुन तिवारी* 50
भारत के महान योगी (भाग 1-2) *विश्वनाथ मुखर्जी* 80
भारत के महान योगी (भाग 3-4) '' 100
भारत के महान योगी (भाग 5-6) '' 100
भारत के महान योगी (भाग 7-8) '' 80
भारत के महान योगी (भाग 9-10) '' 100
भारत की महान साधिकाएँ '' 40
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना.वि. सप्रे* 120
भुड़कुड़ा की सन्त-परम्परा *डॉ. इन्द्रदेव सिंह* 100
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 100
महात्मा बनादास : जीवन और साहित्य *डॉ. भगवतीप्रसाद सिंह* 60

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

वाग्विभव *प्रो. कल्याणमल लोढ़ा* 200
गुप्त भारत की खोज *पॉल ब्रंटन* 200
मारण पात्र (सत्य घटनाओं पर आधारित योग तांत्रिक कथा प्रसंग) *अरुणकुमार शर्मा* 250
वह रहस्यमयी कापालिक मठ '' 180
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी '' 180
मृतात्माओं से सम्पर्क '' 200
जपसूत्रम (द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 150
सोमतत्त्व *सं. प्रो. कल्याणमल लोढ़ा* 100
वेद व विज्ञान *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
भारतीय धर्म साधना '' 120
श्री साधना '' 50
दीक्षा '' 60
सनातन-साधना की गुप्तधारा '' 100
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना *रमेशचन्द्र अवस्थी* 50
परातंत्र साधना पथ (गोपीनाथ कविराज) '' 40
श्रीकृष्ण : कर्म दर्शन (अद्‌भुत लीला प्रसंग) *शारदाप्रसाद सिंह* 40
रावण की सत्यकथा *रामनगीना सिंह* 60
कृष्ण और मानव सम्बन्ध (गीता) *हरीन्द्र दवे* 80
कृष्ण का जीवन संगीत (गीता) *डॉ. गुणवन्त शाह* 300
हिन्दी ज्ञानेश्वरी (गीता) *(अनु.) ना.वि. सप्रे* 250
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (3 खंडों में) *श्री श्यामाचरण लाहिड़ी* 325
नीब करौरी बाबा के मधुर दिव्य प्रसंग *रामदास व गिरिराज शाह* (यंत्रस्थ)
प्राणमयं जगत *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 22
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 100
भ्रमर-गीत *करपात्रीजी महाराज* 90

योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व

योग साधना (80 चित्रों सहित) *दुर्गाशंकर अवस्थी* 120
योग के विविध आयाम *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 40
दीर्घायु के रहस्य *डॉ. विनयमोहन शर्मा* 50

संस्कृत व्याकरण तथा रचना

प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 15
रचनानुवाद कौमुदी *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 40
प्रौढ़-रचनानुवाद कौमुदी *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 80
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी (सम्पूर्ण) *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 200
संस्कृत-निबन्ध-शतकम् *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 70
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र '' 200
अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन '' 400
बालसिद्धान्तकौमुदी *ज्योतिस्वरूप मिश्र* 50
सिद्धान्त-कौमुदी (कारक प्रकरणम्) *ज्योतिस्वरूप मिश्र, उर्मिला मोदी* 20

साहित्यशास्त्र तथा समीक्षा

अभिनव रस सिद्धान्त *डॉ. दशरथ द्विवेदी* 40
रसाभिव्यक्ति *डॉ. दशरथ द्विवेदी* 120
अभिनव का रस-विवेचन *नगीनदास पारेख तथा डॉ. प्रेमस्वरूप गुप्त* 100
वक्रोक्तिजीवितम् *डॉ. दशरथ द्विवेदी* 40
ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीका सहित) *डॉ. चण्डिकाप्रसाद शुक्ल* 50
मृच्छकटिक : शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन *डॉ. शालग्राम द्विवेदी* 100
उपरूपकों का उद्भव और विकास *डॉ. इन्द्रा चक्रवाल* 100
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास *डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी* 300
संस्कृत साहित्य की कहानी *उर्मिला मोदी* 50
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय *डॉ. शिवशंकर गुप्त* 80

कोश तथा भाषा शास्त्र

संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ. भोलाशंकर व्यास* 100
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र *डॉ. कपिलदेव द्विवेदी* 200
शिवराम त्रिपाठी कृत लक्ष्मीनिवास कोश (उणादि कोश) *डॉ. रामअवध पाण्डेय* 40

इतिहास, संस्कृति और कला (History, Art & Culture)

Ancient Indian Administration & Penology *Paripurnanand Varma* 300
Life in Ancient India *Dr. Mahendra Pratap Singh* 100
The Imperial Guptas, Vol. I-II *Dr. P.L. Gupta Each* 150
Hinduism and Buddhism *Dr. Asha Kumari* 200
दिल्ली सल्तनत (तराइन से पानीपत) *डॉ. गणेशप्रसाद बरनवाल* 80
दक्षिण-पूर्व एशिया *डॉ. शैलेन्द्रप्रसाद पांथरी* 30
वाल्मीकियुगीन भारत *डॉ. मंजुला श्रीवास्तव* 200
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा *डॉ. लल्लनजी गोपाल* 150
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ *डॉ. श्रीराम गोयल* 200
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ '' 50
बौद्ध तथा जैन धर्म *डॉ. महेन्द्रनाथ सिंह* 110
अयोध्या का राजवंश *नगीना सिंह* 60
प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन *डॉ. चन्द्रदेव सिंह* 150
प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक *डॉ. विमलमोहिनी श्रीवास्तव* 250
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन) *प्रो. ए.के. नारायण* 300
प्राचीन भारत *डॉ. राजबली पाण्डेय* 300
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-1 : मौय-काल से कुषाण (गुप्त-पूर्व) काल तक) *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 150
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-2 : गुप्त-काल 319-543 ई.) *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 120
गुप्त साम्राज्य *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 250
भारतीय वास्तुकला *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 100
भारत के पूर्वकालिक सिक्के '' 150
हमारे देश के सिक्के *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 15
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ *डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त* 60
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ (600 से 1200 ई.) *डॉ. ओंकारनाथ सिंह* 100
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु *डॉ. पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 200
प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्ति-कला *डॉ. बृजभूषण श्रीवास्तव* 200
शुंगकालीन भारत *सच्चिदानन्द त्रिपाठी* 50
चालुक्य और उनकी शासन-व्यवस्था *डॉ. रेणुका कुमारी* 60
बुद्ध और बोधिवृक्ष *डॉ. शीला सिंह* 150
कम्बुज देश का राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास *डॉ. महेशकुमार शरण* 175
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला *डॉ. मारुतिनन्दन तिवारी व डॉ. कमल गिरि* 150
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण (7वीं शती से 13वीं शती) *डॉ. मारुतिनन्दन तिवारी व डॉ. कमल गिरि* 325
इतिहास दर्शन *डॉ. झारखण्डे चौबे* 120
प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार *डॉ. हीरालाल गुप्त* 30
हिन्दू समाज : संघटन और विघटन *डॉ. पुरुषोत्तम गणेश सहस्रबुद्धे* 50
क्षत्रियों की उत्पत्ति एवं विकास *डॉ. सरोज रानी* 200
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन *डॉ. हरिशंकर श्रीवास्तव* 80
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा *डॉ. पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 120
दिल्ली के सुलतानों की धार्मिक नीति (1206-1526 ई.) *डॉ. निर्मला गुप्ता* 80

चित्रकला

भारतीय चित्रकला के मूल स्रोत *डॉ. भानु अग्रवाल* 400
कला *हंसकुमार तिवारी* 150

समाजशास्त्र, दर्शन तथा मनोविज्ञान

भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप और विकास *सं. डॉ. सत्येन्द्र त्रिपाठी* 60
ब्राह्मण-समाज का ऐतिहासिक अनुशीलन *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 200
भारद्वाज : पूर्वज और वंशज *विश्वनाथ भारद्वाज* 560
क्षत्रियों की उत्पत्ति एवं विकास *डॉ. सरोज रानी* 200
समाजशास्त्र *मारिस गिन्सबर्ग* 25
सामाजिक जनांकिकी *नीलकंठ शा. देशपांडे* 80
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय *डॉ. शिवशंकर गुप्त* 80
समाज-दर्शन की भूमिका *डॉ. जगदीशसहाय* 80
सामाजिक मनोविज्ञान *व.वि. अकोलकर* 25
अपराध के नये आयाम तथा पुलिस की समस्याएँ *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 50
भारतीय पुलिस *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 80
पुलिसकर्मियों की समस्याएँ : समाजवैज्ञानिक अध्ययन *डॉ. विजयप्रताप राय* 300
सामाजिक व्यवस्था में पुलिस की भूमिका *चमनलाल प्रद्योत* 40
अरविंद-दर्शन की भूमिका *एस.के. मैत्रा* 20
सोमतत्त्व *प्रो. कल्याणमल लोढ़ा* 100
वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180
मनोविज्ञान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य *डॉ. (श्रीमती) गायत्री* 150
विकासवाद और श्री अरविन्द *डॉ. जयदेव सिंह* 20
Modern Indian Mysticism (3 Vols.) *Sobharani Basu* 150

शिक्षा (Education)

Educational and Vocational Guidance in India *Dr. K.P. Pandey* 300
Teaching of English in India *Dr. K.P. Pandey* 300
शैक्षिक अनुसंधान *डॉ. के.पी. पाण्डेय* 100
शिक्षा मनोविज्ञान के मूल आधार *सत्यव्रत तिवारी* 50
सतत शिक्षा का सामुदायिक स्वरूप *डॉ. यागेन्द्रनारायण मिश्र* 60
शिक्षा-सिद्धान्त एवं दर्शन *सत्यदेव सिंह* 40

पत्रकारिता, जनसंचार, सिनेमा

इतिहास निर्माता पत्रकार *डॉ. अर्जुन तिवारी* 100
प्रेस विधि *डॉ. नन्दकिशोर त्रिखा* 150
मध्य प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता *डॉ. कैलाश नारद* 60
संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता *डॉ. अशोककुमार शर्मा* 300
समाचार और संवाददाता *काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर* 80
संवाद संकलन विज्ञान *नारायण व्यंकटेश दामले* 50
स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी *डॉ. अर्जुन तिवारी* 120
हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान *बच्चन सिंह* 40
आधुनिक पत्रकारिता *डॉ. अर्जुन तिवारी* 80
पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया *शिवप्रसाद भारती* 200
आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता *इन्द्रसेन सिंह* 120
Mass Communication & Development *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250
Journalism by Old and New Masters *(Ed.) Dr. Baldeo Raj Gupta* 250
Modern Journalism & Mass Communication *(Ed.) Dr. Baldeo Raj Gupta* 250

संगीत

भारतीय संगीत का इतिहास *डॉ. ठाकुर जयदेव सिंह* 300
प्रणव-भारती *पं. ओङ्कारनाथ ठाकुर* 300
भारतीय सङ्गीतशास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन *डॉ. विमला मुसलगाँवकर* 400
Indian Music *Dr. Thakur Jaideva Singh* 450
Indian Aesthetics & Musicology *Dr. Premlata Sharma* 500
राग जिज्ञासा *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 500

सैन्य विज्ञान (Military Science)

ब्रिटिश शासन और भारतीय जासूस *धर्मेन्द्र गौड़* 100

प्रमुख पाठ्य ग्रन्थ

संगीत

विज्ञान-कथा *डॉ. एस.एन. घोष* 50

भूगोल

भौगोलिक चिन्तन : उद्भव एवं विकास *डॉ. श्रीकांत दीक्षित* 90

Zoology

Fishes of U.P. & Bihar *Dr. Gopalji Srivastava* (P.B.)80, (H.B.) 150

Physics

Practical Physics *Dr. C.K. Bhattacharya* 60
Waves and Oscillations (Fourth Revised & Enlarged Edition) *Dongre & Bhattacharya* 120
Matries & Its Applications *Dr. C.K. Bhattacharya* 15

English Literature

The Mayor of Casterbridge *Thomas Hardy* 25
Shakespearian Comedy *H.B. Charlton* 120
Shakespere : A Critical Study of His Mind & Art *Edward Dowden* 150
Prose of Reason and Good Sense *(Ed.) Dr. M. Singh & others* 9
Essays : Impersonal and Personal *(Ed.) Dr. P.S. Awasthi & others* 20
Modern Essays *(Ed.) R.S. Tripathi & others* 24
Representative One-Act Plays *(Ed.) A.H. Beg & M. Pandey* 16
Six English Poets *(Ed.) Prof. D.R. Singh & Dr. Prabhakr Singh* 16
An Anthology of Poems of The Victorian Era *(Ed.) Dr. M. Pandey & Dr. A.K. Mishra* 25
A Colletion of Short Stories *(Ed.) Dr. Lalji Misra & Prof. Manoj Kumar* 20
Selected Modern Poetry *(Ed.) Prof. A.H. Beg & G.S. Dwivedi* 16
Modern English Essays *(Ed.) Dr. R.N. Pandey* 18
Nineteenth Century English Essays *(Ed.) Prof. Manoj Kumar* 20
Twentieth Century Poetry *Shruti Srivastava* 30

काव्य-संकलन (सम्पादित)

आधुनिक हिन्दी काव्य *डॉ. सत्यनारायण सिंह* 25
आधुनिक काव्य विविधा *डॉ. शम्भूनाथ त्रिपाठी* 25
अज्ञेय और मुक्तिबोध की प्रतिनिधि कविताएँ *डॉ. शम्भूनाथ त्रिपाठी* 30
आधुनिक काव्यधारा *डॉ. विजयपाल सिंह* 30
छायावाद के प्रतिनिधि कवि *''* 20
काव्य-सौरभ *पुरुषोत्तमदास मोदी* 20
समकालीन कविता *डॉ. मालती तिवारी* 15
दिशान्तर *डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव तथा डॉ. विश्वनाथप्रसाद तिवारी* 20
अभिव्यक्ति *डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव* 8
मध्यकालीन काव्य-संग्रह *केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा* 40
आधुनिक काव्य-संग्रह *''* 100
रीति-रस *डॉ. शुकदेव सिंह* 15
रीति काव्यधारा *डॉ. रामचन्द्र तिवारी तथा डॉ० रामफेर त्रिपाठी* 50
पद्मावत (संक्षिप्त) *डॉ. सच्चिदानन्द राय व डॉ. मान्धाता राय* 36
संक्षिप्त रामचन्द्रिका *सं. डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 20
सूर-सञ्चयन *उर्मिला मोदी* 30
कबीर वाणी पीयूष *डॉ. ठाकुर जयदेव सिंह तथा डॉ. वासुदेव सिंह* 45
कबीर-साखी-सुधा *''* 10

अन्य काव्य ग्रन्थ

जौहर *श्यामनारायण पाण्डेय* 50
परशुराम (खण्ड-काव्य) *श्यामनारायण पाण्डेय* 30
प्रसाद तथा 'आँसू' *डॉ. विनयमोहन शर्मा* 20
आँसू (कविता) *जयशंकरप्रसाद* 8
कामायनी (काव्य) *जयशंकरप्रसाद* 20
लहर *जयशंकरप्रसाद* 15
वेलि क्रिसन रुकमणी री *सं. डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित* 80
कीर्तिलता और विद्यापति का युग *डॉ. अवधेश प्रधान* 40

निबन्ध-संग्रह

आधुनिक निबन्ध *डॉ. सुरेन्द्र प्रताप* 20
निबन्ध और निबन्ध *उमाकान्त त्रिपाठी* 12
सात निबन्ध *डॉ. रघुवंश तथा डॉ. परमानन्द श्री.* 16
निबन्ध-निचय *डॉ. केशवप्रसाद सिंह तथा डॉ. वासुदेव सिंह* 16
ललित निबन्ध *केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा* 20
निबन्ध-सौरभ *डॉ. श्रीप्रसाद, डॉ. बिसम्भरनाथ* 12
संस्कृति-प्रवाह *प्रो. सोमेश्वर* 12
निबन्धायन *डॉ. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय* 12
निबंध निकष *डॉ. रामचन्द्र तिवारी* 40
गद्य-सौरभ *सुमन मोदी* 8
गद्य-गौरव *उर्मिला मोदी* 12
संस्कृति संगम *श्रीप्रसाद* 12

नाटक

छोटे नाटक (एकांकी) *डॉ. शुकदेव सिंह* 22
भारत दुर्दशा *भारतेन्दु* 8
अंधेर नगरी *भारतेन्दु* 12
शताब्दी पुरुष *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 40

कहानी संग्रह

प्रतिनिधि कहानियाँ	*डॉ. बच्चन सिंह*	25
आधुनिक कहानी-संग्रह	*के०हि०सं०, आगरा*	40
कृती कथाएँ	*डॉ. शुकदेव सिंह*	20

उपन्यास

तरुण संन्यासी (विवेकानंद)	*राजेन्द्रमोहन भटनागर*	60
मंगला	*अनन्तगोपाल शेवड़े*	30
बनगंगी मुक्त है	*डॉ. विवेकी राय*	25
लोक-ऋण	*डॉ. विवेकी राय*	80
कर्मभूमि	*प्रेमचंद*	40
निर्मला	*प्रेमचंद*	25
संक्षिप्त गबन	*प्रेमचंद*	30
गबन (सम्पूर्ण)	*प्रेमचंद*	45
गोदान	*प्रेमचंद*	75

सधन्यवाद पुस्तक प्राप्त

श्रीमद्भगवद्गीता		60.00
श्री यंत्र साधनाविधि		30.00
अच्छी सरकार कैसी हो ?	*नानुभाई नायक*	25.00
संविधान संशोधन के लिए सुझाव	*नानुभाई नायक*	25.00

साहित्य संकुल, चौटा बाजार, सूरत-395001

केन्द्रीय विद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय तथा सार्वजनिक उपक्रम पुस्तकालयों को विविध विषयों की पुस्तकों के आपूर्तिकर्ता

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक पुलिस स्टेशन के बगल में
पो०बाक्स 1149, वाराणसी

● हिन्दी साहित्य ● उपन्यास ● कहानी ● नाटक ● जीवनी ● संस्मरण ● रेखाचित्र ● कोश ● विश्वकोश ● विभिन्न लेखों के सम्पूर्ण साहित्य ● इतिहास ● भूगोल ● राजनीति ● समाजशास्त्र ● अर्थशास्त्र ● मनोविज्ञान ● शिक्षा ● गृह विज्ञान ● दर्शन ● कम्प्यूटर साइन्स ● अंग्रेजी साहित्य ● प्रतियोगी परीक्षा साहित्य ● पत्रकारिता ● पुस्तकालय विज्ञान ● विज्ञान ● भौतिक विज्ञान ● रसायन विज्ञान ● गणित ● प्राणि विज्ञान ● वनस्पति विज्ञान ● कृषि विज्ञान ● सैन्य विज्ञान ● कला ● महिलापयोगी आदि

सर्वोपयोगी पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विस्तृत शोरूम, पुस्तक चयन की सुविधा, डाक से आदेश प्राप्त होने पर यथाशीघ्र आपूर्ति की व्यवस्था।

भारतीय वाङ्मय
सदस्यता के लिए आवेदन पत्र

1. नाम (स्पष्ट अक्षरों में).....
2. पता.....
   पिन कोड..... फोन नं०.....
3. आयु..... 4. व्यवसाय.....
5. विशेष रुचि : कृपया बॉक्स में निशान (✓) लगाएँ—

उपन्यास/कहानी	☐	कविता/शायरी	☐
अध्यात्म/धर्म	☐	निबन्ध	☐
आलोचना	☐	संस्मरण/जीवनी	☐
इतिहास/संस्कृति	☐	राजनीति/पत्रकारिता	☐

6. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी के नाम 30/- रु० की राशि मनीआर्डर द्वारा भेजें।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **जून 2001** **अंक : 6**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in